तुम समझ के संगत

तुम समझ के संगत कीजो रे बाबा, मुझ जैसा दिवाना न कोई।
जाही सों लोक लज्या पावे, सो तो मोहे बड़ाई।।

मैं तो बात करूं रे दिवानी, दुनियां तो स्यानी सुजान।
स्याने दिवाने संग क्योंकर होवे, तुम मिलियो मोहे पेहेचान।।

जब मैं मरम पायो मोहजल को, तब मैं भाग्या रोई।
डर के उबट चल्या उबाटे, बाट बड़ी मैं खोई।।

मैं छोड़े कुटम सगे सब छोड़े, छोड़ी मत स्वांत सरम।
लोक वेद मरजादा छोड़ी, भाग्या छोड़ सब धरम।।

अब तो कछुए न देखत मद में, पर ए मद है पल मात्र।
महामत दिवाने को कह्यो न माने, सो पीछे करसी पछताप।।